



ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल



विचार

एकता का प्रतीक



सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल

(Guiding force)

सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ



पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।



प्रकाशक

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)

"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी—लालपुर रोड फरीदाबाद—121002 (हरियाणा)

ई—मेल: info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org

© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-68-0

प्रथम संस्करण | जुलाई, 2024



साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

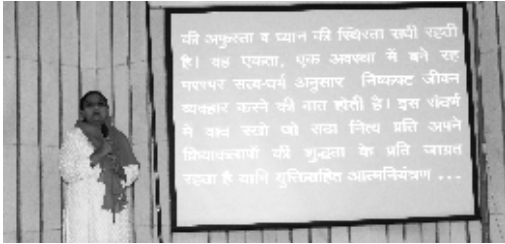
ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और
निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,
इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा







विचार



भूमिका

हम सब जानते हैं, मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कलाकृति है क्योंकि उसके पास बुद्धि द्वारा सोच-समझ कर निश्चय लेने की यानि किसी विषय पर मन में भली-भांति विचार कर विवेकसम्मत निर्णय लेने की शक्ति है। इसी कारण मानव समस्त प्राणियों से भिन्न विचारशील प्राणी माना जाता है। शास्त्र अनुसार उसका जीवन उस द्वारा अपनाए विचारों का साक्षात् प्रतिबिम्ब होता है क्योंकि वह जीवन में जो करता है वह विचारों की प्रेरणा से ही करता है। इस आशय से जीवन की सफलता-असफलता, सुख-दुःख, शांति-अशांति, तुच्छता-महानता, स्वस्थता-अस्वस्थता, प्रसन्नता-अप्रसन्नता, दुर्गति-सद्-गति सब उस द्वारा अपनाए विचारों/कुविचारों पर ही निर्भर करती है यानि विचारों/कुविचारों अनुरूप ही उसे इस जगत में क्रमशः समरसता अथवा विभिन्नता व विचित्रता



दिखाई पड़ती है। विचारों/कुविचारों अनुरूप ही जीवन बनता-बिगड़ता है और अन्ततः मानव वैसा ही बन जाता है जैसे उसके विचार/कुविचार होते हैं। विचारों की इसी अपूर्व शक्ति और असाधारण महत्ता के दृष्टिगत आइए आज जानते हैं विचार/अविचार के बारे में :-

विचार/अविचार - शाब्दिक परिभाषा

विचार से तात्पर्य किसी विषय, वस्तु या बात पर, भली-भांति बुद्धि से सोचकर, यानि उसके सब अंग देख कर या उसकी ऊँच-नीच, उचित-अनुचित पर विचार कर, निश्चय करने की क्रिया से है। विचार निश्चयात्मक बोध है व विचारवान अपनी विशेष विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा, मन की पवित्रता व सर्वहितकारिता के प्रतीक, शास्त्रसम्मत शुद्ध व अच्छे सुविचारों का ग्रहण कर, हर कदम पर सफलता प्राप्त करता है।

इसके विपरीत अविचार हर काम उचित-अनुचित, न्याय, औचित्य आदि का विचार किए बिना,



नासमझी से करने की क्रिया है। अविचार के कारण मन में नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प उठते रहते हैं और इंसान यथार्थ बोध नहीं कर पाता यानि अविचार अनिश्चयात्मक बोध है व अविचारी विवेकहीनों की भांति सदा मन की मलीनता, स्वार्थपरता, ईर्ष्या-द्वेष व संकीर्णता आदि के सूचक अधर्मयुक्त दुष्ट, बुरे व अशुभ कुविचारों का ग्रहण कर, असफलता को प्राप्त होता है। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

**विचार ते अविचार दो शब्द हैन,
विचार सबनां बातां वल्लों जित और फतह
अविचार है हार अविचार है हार।।**

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-चतुर्थ,
वीरवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न० 1)

विचार/अविचार - स्पष्टता



सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार विचार महाराज



जी/ईश्वर के मुख की वाणी है यानि आत्मा की
आवाज़ है, गुरुमत है, तथा कुदरती आई हुई है,
इसलिए सार्थक व शांतिप्रदायक है। जैसा कि कहा
भी गया है:-

कुदरती विचार आई हृदय विच शांति पाई,
खुश हो रहे श्री राम रघुराई
विचार नाल होन लगा कैसा ओ प्यार जी,
कैसा ओ प्यार जी

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, चतुर्थ सोपान,
कीर्तन न० 65)

इस आशय से विचार हमारे अन्दर निहित
प्राकृतिक शक्ति अथवा क्षमता है और जीवन
व्यवहार के दौरान इस क्षमता के निरंतर प्रयोग
से, हृदय निहित चार वेद-छः शास्त्रों का गुप्त
आत्मिक ज्ञान हमें निरन्तर प्राप्त होता रहता है।
इसी आत्मज्ञान के बलबूते पर हमारे अन्दर
परिस्थितियों, तथ्यों एवं तत्त्वों का विश्लेषण करके
सर्वोत्तम विकल्प चुनने की क्षमता विकसित होती है



और हम विवेकशील बनते हैं। विवेकशील ही सत्य-असत्य, भले-बुरे का सहज ज्ञान कर पाता है और उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल हो, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर, निर्भयता से बने रह, आत्मस्वरूप का दर्शन कर अपनी अजरता-अमरता का बोध कर पाता है। जैसा कि कहा भी गया है:-



**सत्-असत् दा विचार जेहड़ा करदा,
सत सत बात इंसान ओ फड़दा
सच्चाई धर्म दे विच ओ विचरदा,
श्री राम जी दे दर्शन ओ करदा**

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, षष्ठम सोपान,
कीर्तन न० 7)

इसके विपरीत अविचार कुसंग की देन है व मनुराज ने रची है और अज्ञानमय होने के कारण अशांतिप्रदायक है। यहाँ कुसंग से तात्पर्य ईश्वर का संग छोड़कर, जगतीय विषयों का संग करने से है। जानो इसी कुसंग के कारण हमारे मन में जगतीय पदार्थों/वस्तुओं को देखकर उनको पाने की इच्छा/कामना जाग्रत होती है। कामना न पूरी होने पर क्रोध और पूरी हो जाने पर लोभ व मोह





पनपता है। इसी मोह के कारण हम संसारी वस्तुओं से अपना नाता जोड़ यानि 'मैं' और 'मेरा' के स्वार्थपर भाव में फँस, अहंकारी बन जाते हैं और भले-बुरे, उचित-अनुचित का विचार नहीं कर पाते। इस तरह हम स्वार्थ का कामनायुक्त कुरस्ता पकड़ कर, पतन की गर्त में जा गिरते हैं यानि अपनी यथार्थता से अपरिचित हो, जन्म मरण के अधिकारी बन आवागमन की त्रास भुगतते हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-



अव विचार जेहड़ा चलदा है सजन,
चार चुफेर हार ओ खांदा है।
विचार है जित तुम्हारी ओ सजनों,
हर पासियों ओ जितदा रैहंदा है॥
अव विचार है जे कवलड़ा रस्ता,
हर पासियों ओ ठोकरां खांदा है।
विचार है जे सवलड़ा रस्ता,
सदा ही ओ जितदा रैहंदा है॥



(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-
द्वितीय, कीर्तन न० 29)





अर्थात् विचार जीवन का सवलड़ा यानि सरल व सुगम रास्ता है और अव विचार कवलड़ा अर्थात् उलझनों भरा रास्ता है। विचार मार्ग पर चलने वाले की हर तरफ से जीत ही जीत होती है और अविचार के मार्ग पर चलने वाले को हर तरफ से ठोकरें व हार ही प्राप्त होती है। अतः अगर आप भी जीवन की हारी हुई बाज़ी जीतना चाहते हो तो विचार प्रक्रिया को ठीक से अपनाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

**शब्द विचार नाल पकड़े जो आप नूं,
मेल खांदा केहड़ा ओ केहड़ा**

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, पंचम सोपान,
कीर्तन न० 101)

विचार-प्रक्रिया

जानो चिंतन (Contemplation) व मनन (Consideration) विचार प्रक्रिया के अनिवार्य तत्त्व हैं। चिंतन से यहाँ आशय किसी विषय/बात को सोचने व समझने के लिए उसे बार-बार स्मरण या





ध्यान में लाने से है तथा मनन से आशय गहनता से उस बात या विषय पर सोच विचार कर शंका समाधान द्वारा उसके बारे में निश्चय लेने से है। इस आशय से विचार मंथन की क्रिया है यानि विवेचन द्वारा अमुक वस्तु/विषय के संदर्भ में सत्य-असत्य की परख करने के पश्चात् यथार्थ को अपनाने की अद्भुत कला है। अतः इस कला के प्रयोग द्वारा आप भी कदम-कदम पर अपने ख्याल को, अपने संकल्प को, अपनी जिह्वा को, अपनी दृष्टि को, अपने आहार को, अपने स्वभावों को, अपने आचार-व्यवहार को यानि कि अपनी दिनचर्या की प्रत्येक क्रियाविधि को, उसके हर पहलू को, हर काम व बात को सावधानी से परखो और अपने जीवन में केवल उन्हीं विचारों को ही मान्यता दे, व्यवहार में लाओ जो सत्यतापूर्ण व विधिसम्मत हो। जैसा कि कहा भी गया है:-

**पहले अपने आप को तोलें और तुल खड़ोवें।
अफुर हो जावें।**

(श्री साजन जी के पत्र सभाओं के नाम, पत्र न० 5,
युक्ति दूसरी, पृष्ठ न० 7)













आशय यह है कि :-



1. विचारशक्ति द्वारा क्षण-प्रतिक्षण अपने मन में उठने वाले ख्यालों/भावों की जाँचना करो ताकि इन्द्रिय विषयों के कारण किसी प्रकार की कोई नकारात्मक सोच या निराशा अन्दर न पनप जाए। इस तरह सदा सकारात्मक बने रहो।

2. विचार से अपने संकल्प को पकड़ो कि कहीं यह संसारी वस्तुओं या संगी-साथियों के कुसंग में फँस अस्वच्छ न हो जाए यानि झुखने-रौने में न चला जाए। यहाँ याद रखो, संकल्प झुखता है तो इंसान रौता है और मानसिक अस्थिरता पनपती है।

3. विचार द्वारा अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखो यानि जो बात भी किसी के साथ करो विचार से करो व विचार से ही उत्तर दो। बिना सोचे-समझे कुछ न बोलो और जो भी बोलो वह सत्य बोलो। इस तरह अपनी जिह्वा की स्वतन्त्रता बनाए रखो।



4. विचार का प्रयोग करते हुए अपनी दृष्टि यानि देखने की वृत्ति या शक्ति को सदा हर प्रकार के





कामुक भाव से स्वतन्त्र रख, उसकी स्वस्थता व स्वच्छता समरस बनाए रखो। इस संदर्भ में परमेश्वर कहते हैं कि 'सर्वव्यापी भगवान है, विचार के साथ सब में विराट् रूप भगवान नज़र आवे। अतः बाल, वृद्ध, गरीब, अमीर, यही चमत्कार हर एक में जग रहा है, विचार के साथ यही दृष्टि पकड़ो। इस तरह दृष्टि विराट् रूप हो जाए, दृष्टि उजली हो गई तो चमक पड़ोगे'।

5. विचार द्वारा रसनेन्द्रिय पर नियन्त्रण रखो यानि सात्विक व पौष्टिक संतुलित आहार का सेवन करो। साग को कड़ाह समझो यानि हैसियत अनुसार जो प्राप्त हुआ है उसी में प्रसन्न बने रहो। स्वादवश या देखा-देखी राजसिक व तामसिक आहार या माँस-मदिरा/सिगरेट व नशीले पदार्थों आदि का सेवन करने की लत में मत फँसो।

6. विचारशक्ति के इस्तेमाल द्वारा अपने आचार-व्यवहार पर नज़र रखो। आशय यह है कि किसी कारण भी दुराचारी या दुर्व्यवहारी मत बनो, किसी





को दुःख या पीड़ा मत पहुँचाओ, किसी का बुरा मत करो। यहाँ याद रखो, जैसे हमें दुःख प्रिय नहीं है वैसे ही किसी को भी दुःख प्रिय नहीं है। अतः सबसे शिष्टता युक्त, सभ्य व्यवहार करने वाले सज्जन पुरुष बनो।

7. अंत में आज के वातावरण में सबसे महत्त्वपूर्ण विचारपूर्वक अपनी संगति पर नज़र रखो यानि भूल कर भी ऐसे लोगों का संग-साथ मत करो, जो आपको थोड़ा सा लालच दिखा कर सद्मार्ग से गुमराह करने का यत्न करते हैं यानि कुरस्ते पर ले जाते हैं। इस तरह स्वयं पर सतर्क रहते हुए अन्य कुरस्ते पड़े हुआं को भी रास्ते पर ला परोपकार कमाओ।

जानो जब इस प्रकार धीरता से कदम-कदम पर विचार को पकड़ आत्मसुधार करते जाओगे तो विचार से प्यार होने लगेगा यानि विचारसंगत हर कार्य को करने की क्रिया, मन को भाने लगेगी और





आप खालस सोने की भांति चमकते जाओगे । जैसा
कि कहा भी गया है:-



**कदम कदम ते विचार, विचार नाल होवे प्यार
दिव्य दृष्टि सजनों दिखाओ, जित्तो मृतलोक नूं**

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-
द्वितीय, बुधवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न० 30)

ऐसा होने पर आपके लिए जीवन की हर अवस्था में संतोष, धैर्य का सिंगार पहन, सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर चलना व कुल दुनियां में एक प्रकाश समझते हुए, परस्पर आत्मीयता यानि सजन भाव अनुरूप विचरना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा । इस तरह एक निगाह एक दृष्टि होकर आपकी दिव्य दृष्टि हो जाएगी और आप एक आत्मा होकर परमात्मा से मेल खाकर ज्योति स्वरूप जो अपना आप है, उसकी पहचान कर रौशन हो जाओगे और मृतलोक पर फतह पा जाओगे । इसलिए तो शास्त्र में कहा भी गया है:-



‘जिस सजन ने विचार के साथ कुल
दुनियां में और जनचर-बनचर,
जड़-चेतन में एक प्रकाश समझ लिया
उस सजन की फ़तह ही फ़तह’ ।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-चतुर्थ,
वीरवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न० 1)

विचारों की गहराई/मौलिकता एवं परिष्करण

मन में उठने वाले विचारों की गहराई/मौलिकता मन-मस्तिष्क की निर्मलता (Purity) पर निर्भर करती है यानि यदि मन शुद्ध है तो विचार भी शुद्ध होंगे और अगर मन दूषित है तो अविचार हावी हो जाएगा। यही नहीं मनुष्य के व्यक्तिगत विचार ही उसकी योग्यता (Ability) और व्यक्तिगत क्षमता (Capacity) को प्रकाशित कर उसकी बुद्धिमत्ता (Intelligence) का परिचय भी देते हैं। इसके विपरीत कुविचार मनुष्य की विचारशून्यता व अविवेकशीलता का परिचय दे उसके व्यक्तित्व को चंचल व बुद्धि को कुंठित कर देते हैं। मानव को इन



कुविचारों के कुसंग से बचाने हेतु ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-



**शास्त्र नूं विचार हुन, दरखत नूं संवार,
हुन कदे न खासैं हार, जयकार सदा जयकार**

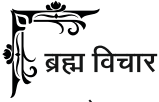
(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, द्वितीय सोपान,
कीर्तन न० 49)

अर्थात् स्थाई रूप से सत् शास्त्र के निरंतर अध्ययन, चिंतन, मनन व विवेचन द्वारा कुविचारों को परिष्कृत (Refine) कर, उन्नत व उच्च भी बनाया जा सकता है। जैसा कि कहा भी गया है कि 'जब इंसान विचार करता है तो सम्भल जाता है और फिर शास्त्र को पढ़ता है'। इस तरह संसार का कनरस छूट जाता है और उसका ध्यान शास्त्र के ज्ञान के कनरस में पड़ जाता है'। ऐसा होने पर वह कह उठता है:-

**हुन शास्त्र लिया विचार, हुण रस्ता लिया है संवार,
सुखकारी लिया है संवार।**

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, द्वितीय सोपान,
कीर्तन न० 49)





ब्रह्म विचार



उपरोक्त महत्ता के दृष्टिगत सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित वाणी यानि शब्द ब्रह्म विचारों का अध्ययन, चिंतन, मनन व अनुशीलन करो और ब्रह्म भाव पर खड़े हो जाओ क्योंकि शास्त्र कह रहा है:-

ब्रह्म नाम ब्रह्म है ध्यान बेटा,
हाँ-हाँ-हाँ ब्रह्म वचन करो प्रवान बेटा।
ब्रह्म विचार नू फड़न सजन,
फिर ब्रह्म है बड़ा महान बेटा।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-
द्वितीय, कीर्तन न० 5)

यहाँ 'ब्रह्म विचार' से तात्पर्य मूलमंत्र आद् अक्षर ओ३म् यानि अमर आत्मा के रूप में सर्वत्र अभिव्यक्त अपनी ब्रह्मसत्ता को ग्रहण कर, 'मैं ब्रह्म हूँ' अर्थात् 'सोद्ग्रहम् अस्मि', इस विचार पर दृढ़ता से खड़ा होने से है। जो इस विचार पर खड़ा हो जाता है वह पूर्ण आत्मसंतोष प्राप्त कर, परमानंद में लीन हो शास्त्र अनुसार कह उठता है:-





विचार ईश्वर आप नूं मान,
अवविचार ईश्वर इक जान।
विचार इक अपना आप ही मान,
अवविचार कुल दुनियां जान।
विचार करो है ईश्वर अपना आप,
अव विचार ईश्वर है इक साथ।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश,
ईश्वर है जे अजपा जाप।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-
द्वितीय, कीर्तन न० 29)

अर्थात् विचारवान 'ईश्वर आप नूं अर्थात् अपने असलियत यथार्थ स्वरूप को मान', एक उसी को सर्वत्र जानता है। वह मानता है कि 'ईश्वर अपना आप प्रकाश है, ईश्वर अजपा जाप है', अतः उसे कहीं खोजने की, कर्मकांड व आडम्बरयुक्त अविचारी भक्ति भावों को अपनाने की या दर-दर भटकने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए वह द्वैत भाव अपना कर अविचारियों की तरह खुद को खुद





बरबादी के रास्ते पर अग्रसर करने की भूल कदापि नहीं करता अपितु इसके स्थान पर वह तो सदा अपने मन को शब्द ब्रह्म विचार से सिंचित कर परम शांति प्राप्त कर लेता है और अपने जीवन के शास्त्रनिर्दिष्ट कर्तव्यों का निर्विकारता से निर्वहन करते हुए परमात्म नाम कहाता है।

निष्कर्ष

आप भी ऐसा निर्विकारी जीवन व्यतीत करने हेतु, अविचार छोड़ शब्द विचार अनुसार जीवन जीने की कला सीखो और वर्तमान में ही परम आनन्द का अनुभव करो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें यही आदेश दे रहा है कि 'शब्द विचार पकड़ के ओहदी करो आराधना' यानि यदि शब्द विचार पकड़ लिया तो फिर कदाचित् किसी परिस्थिति या अवस्था में उससे गिरो नहीं। जानो इससे ख्याल निज सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप में ठहरा रहेगा और बातचीत के दौरान चेहरे पर मुस्कराहट आएगी, बदन प्रफुल्लित होगा, हृदय बहार की तरह





खिड़ेगा, और मुख चमकेगा। इस बात को समझते हुए विचार शब्द को पकड़ कर पूरी तरह समदृष्टि दिखाओ और जन्म की बाज़ी जीत जाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

**पकड़ो शब्द विचार, जे जीवन बनाना जे
जैं जीवन बना लिया अपना, फिर नहीं
पछोताना जे, फिर नहीं पछोताना जे**

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, पंचम सोपान,
कीर्तन न० 87)



Learn the science of inner dimensions at Dhyan-Kaksh

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एवं समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes
can be viewed at



आप इस विषय का वीडियो निम्नलिखित लिंक
(QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं ।

View this class by scanning this QR code link



Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics



**INTERNATIONAL
HUMANITY OLYMPIAD**
www.humanityolympiad.org



**HUMANITY
DEVELOPMENT CLUB**
www.awakehumanity.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyani-Kaksh Social Media



Contact

Mobile : +91 8595070695
Email: contact@dhyankaksh.org
Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyani Kaksh Location



<https://bit.ly/3v408B2>